अ Antara
WITHIN • BETWEEN • BEYOND

Vishnu1000

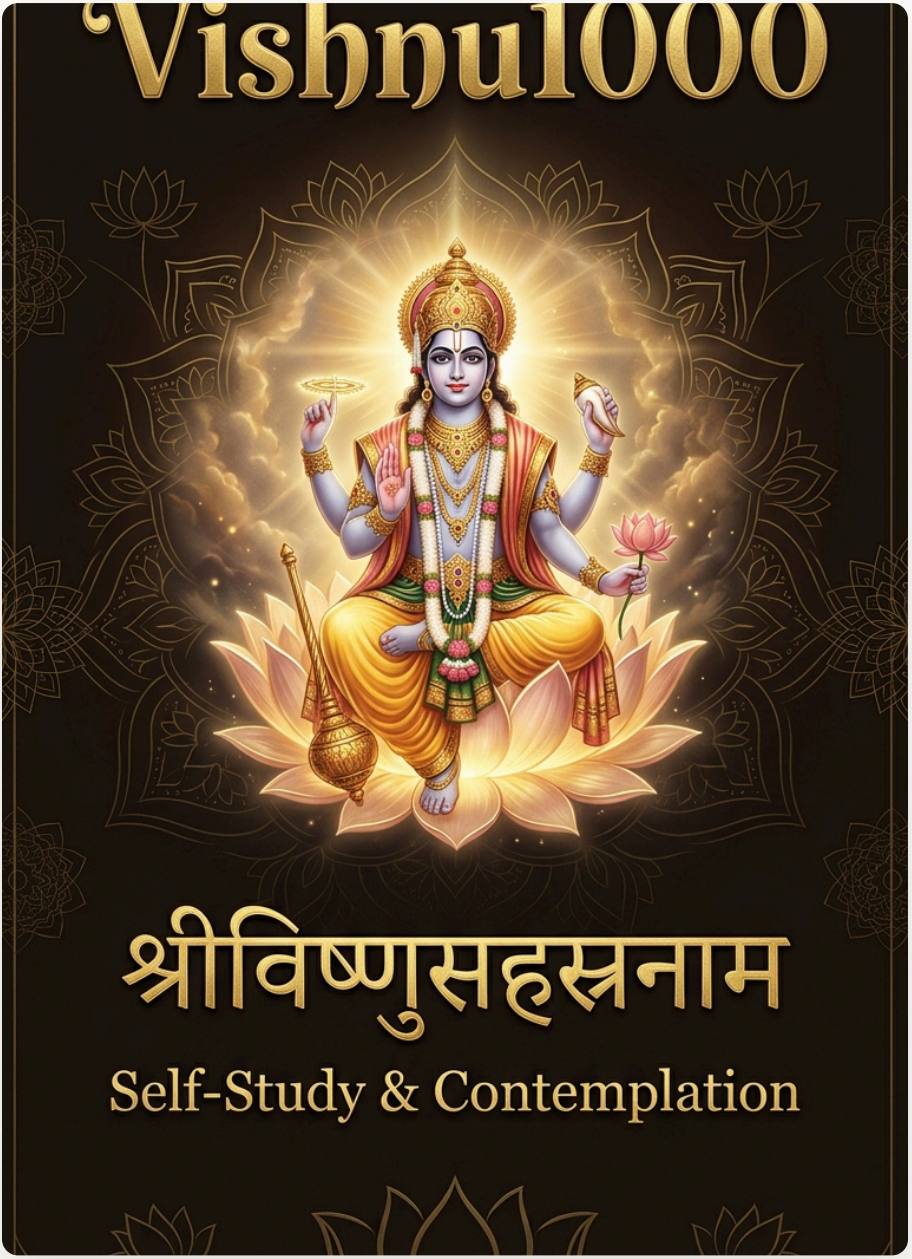

श्रीविष्णुसहस्रनाम

Self-Study & Contemplation

श्रीविष्णुसहस्रनाम स्वाध्याय

(आदि शंकर भाष्य)

००१ ॐ विश्वाय नमः

समस्त सृष्टि

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

००२ ॐ विष्णवे नमः

सर्वव्यापक

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

००३ ॐ वषट्काराय नमः

यज्ञ स्वरूप

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

००४ ॐ भूत-भव्य-भवत्-प्रभवे नमः

त्रिकालस्वामी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

००५ ॐ भूतकृते नमः

सृष्टिकर्ता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

००६ ॐ भूतभृते नमः

पोषणकर्ता

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

००७ ॐ भावाय नमः

परम अस्तित्व

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

००८ ॐ भूतात्मने नमः

प्राणियों की आत्मा

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

००९ ॐ भूतभावनाय नमः

जीवनदाता

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

०१० ॐ पूतात्मने नमः

पवित्र आत्मा

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

०११ ॐ परमात्मने नमः

परमेश्वर

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

०१२ ॐ मुक्तानां परमा गतये नमः

मुक्तों का परम आश्रय

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

०१३ ॐ अव्ययाय नमः

अविनाशी

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

०१४ ॐ पुरुषाय नमः

परम पुरुष

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

०१५ ॐ साक्षिणे नमः

सर्वसाक्षी

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

०१६ ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः

अन्तर्यामी

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

०१७ ॐ अक्षराय नमः

अक्षर पुरुष

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

०१८ ॐ योगाय नमः

योग स्वरूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

०१९ ॐ योगविदां नेत्रे नमः

योगियों के मार्गदर्शक

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

०२० ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय नमः

प्रकृति और पुरुष के स्वामी

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

०२१ ॐ नारसिंहवपवे नमः

नृसिंह स्वरूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

०२२ ॐ श्रीमते नमः

लक्ष्मीपति

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

०२३ ॐ केशवाय नमः

मधुसूदन

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

०२४ ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

सर्वश्रेष्ठ पुरुष

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

०२५ ॐ सर्वाय नमः

सब कुछ

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

०२६ ॐ शर्वाय नमः

विनाशक

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

०२७ ॐ शिवाय नमः

कल्याणकारी

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

०२८ ॐ स्थाणवे नमः

स्थिर सत्य

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

०२९ ॐ भूतादये नमः

सृष्टि का मूल कारण

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०३० ॐ निधिरव्ययाय नमः

अक्षय निधि

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

०३१ ॐ सम्भवाय नमः

स्वयं प्रकट होने वाले

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

०३२ ॐ भावनाय नमः

कल्याणकर्ता

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

०३३ ॐ भर्त्रे नमः

स्वामी

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

०३४ ॐ प्रभवाय नमः

उत्पत्ति स्थान

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

०३५ ॐ प्रभवे नमः

सर्वसमर्थ

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

३६ ॐ ईश्वराय नमः

परम नियन्ता

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

३७ ॐ स्वयम्भुवे नमः

स्वयंभू

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३८ ॐ शम्भवे नमः

सुखदाता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३९ ॐ आदित्याय नमः

सूर्य स्वरूप

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

४० ॐ पुष्कराक्षाय नमः

कमल नयन

यह नाम कोमलता, शांति और अभय प्रदान करने वाले कमल के समान कोमल चरणों का सूचक है। ध्यान के मार्ग पर, यह गुण अशांत चित्त को शीतलता और सुरक्षा प्रदान करता है।

इस नाम के मनन से साधक को भय से मुक्ति और दिव्य करुणा की अनुभूति होती है।

०४१ ॐ महास्वनाय नमः

दिव्य शंखनाद

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

०४२ ॐ अनादिनिधनाय नमः

जन्म-मरण से परे

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

०४३ ॐ धात्रे नमः

सृष्टि धारक

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

०४४ ॐ विधात्रे नमः

भाग्य विधाता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०४५ ॐ धातुरुत्तमाय नमः

सर्वश्रेष्ठ तत्व

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

०४६ ॐ अप्रमेयाय नमः

बुद्धि से परे

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

०४७ ॐ हृषीकेशाय नमः

इन्द्रियों के स्वामी

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

०४८ ॐ पद्मनाभाय नमः

कमल नाभि

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

०४९ ॐ अमरप्रभवे नमः

देवताओं के स्वामी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

०५० ॐ विश्वकर्मने नमः

विश्व के वास्तुकार

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०५१ ॐ मनवे नमः

परम विचारक

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

०५२ ॐ त्वष्ट्रे नमः

रूप देने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

०५३ ॐ स्थविष्ठाय नमः

विशालतम

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

०५४ ॐ स्थविरो ध्रुवाय नमः

प्राचीन और अचल

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

०५५ ॐ अग्राह्याय नमः

इन्द्रिय अगोचर

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

०५६ ॐ शाश्वताय नमः

नित्य सत्य

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०५७ ॐ कृष्णाय नमः

आनंद स्वरूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

०५८ ॐ लोहिताक्षाय नमः

रक्त नयन

यह नाम कोमलता, शांति और अभय प्रदान करने वाले कमल के समान कोमल चरणों का सूचक है। ध्यान के मार्ग पर, यह गुण अशांत चित्त को शीतलता और सुरक्षा प्रदान करता है।

इस नाम के मनन से साधक को भय से मुक्ति और दिव्य करुणा की अनुभूति होती है।

०५९ ॐ प्रतर्दनाय नमः

विनाशक

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

०६० ॐ प्रभूताय नमः

परम समृद्ध

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

०६१ ॐ त्रिककुब्धाम नमः

तीनों लोकों का धाम

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

०६२ ॐ पवित्राय नमः

परम पावन

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०६३ ॐ मंगलं पराय नमः

परम मंगल

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

०६४ ॐ ईशानाय नमः

शासक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

०६५ ॐ प्राणदाय नमः

प्राणदाता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

०६६ ॐ प्राणाय नमः

प्राण स्वरूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

०६७ ॐ ज्येष्ठाय नमः

सबसे प्राचीन

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

०६८ ॐ श्रेष्ठाय नमः

सर्वश्रेष्ठ

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०६९ ॐ प्रजापतये नमः

प्रजा के स्वामी

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

०७० ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

ब्रह्मांड के गर्भ

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

०७१ ॐ भूगर्भाय नमः

पृथ्वी को धारण करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०७२ ॐ माधवाय नमः

लक्ष्मीपति

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

०७३ ॐ मधुसूदनाय नमः

मधु राक्षस के विनाशक

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

०७४ ॐ ईश्वराय नमः

परम नियन्ता

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

०७५ ॐ विक्रमिणे नमः

शौर्यवान

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

०७६ ॐ धन्विने नमः

धनुषधारी

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

०७७ ॐ मेधाविने नमः

परम बुद्धिमान

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

०७८ ॐ विक्रमाय नमः

पराक्रमी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

०७९ ॐ क्रमाय नमः

क्रमिक विकास के आधार

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

०८० ॐ अनुत्तमाय नमः

जिससे श्रेष्ठ कोई नहीं

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०८१ ॐ दुराधर्षाय नमः

अजेय

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

०८२ ॐ कृतज्ञाय नमः

कृतज्ञ

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

०८३ ॐ कृतये नमः

कर्म स्वरूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

०८४ ॐ आत्मवते नमः

स्वयं में प्रतिष्ठित

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

०८५ ॐ सुरेशाय नमः

देवराज

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

०८६ ॐ शरणाय नमः

परम आश्रय

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०८७ ॐ शर्म नमः

परम सुख

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

०८८ ॐ विश्वरेत्रे नमः

विश्व के बीज

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

०८९ ॐ प्रजाभवाय नमः

प्रजा के उत्पत्ति स्थान

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०९० ॐ अहाय नमः

प्रकाश स्वरूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

०९१ ॐ संवत्सराय नमः

काल स्वरूप

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

०९२ ॐ व्यालाय नमः

अगोचर

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०९३ ॐ प्रत्ययाय नमः

चेतना स्वरूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

०९४ ॐ सर्वदर्शनाय नमः

सब कुछ देखने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

०९५ ॐ अजाय नमः

अजन्मा

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०९६ ॐ सर्वेश्वराय नमः

सबके ईश्वर

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

०९७ ॐ सिद्धाय नमः

परम सिद्ध

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

०९८ ॐ सिद्धये नमः

सफलता स्वरूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

०९९ ॐ सर्वादिरच्युताय नमः

सबके आदि

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१०० ॐ वृषाकपये नमः

च्युत न होने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

श्रीविष्णुसहस्रनाम स्वाध्याय

(आदि शंकर भाष्य)

१०१ ॐ अमेयात्मने नमः

धर्म रक्षक व उद्धारक

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

१०२ ॐ सर्वयोगविनिःसृताय नमः

असीम बुद्धि वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१०३ ॐ वसवे नमः

योग बंधनों से परे

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१०४ ॐ वसुमनने नमः

सर्वनिवास

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

१०५ ॐ सत्याय नमः

उदार मन वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१०६ ॐ समात्मने नमः

परम सत्य

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

१०७ ॐ सम्मिताय नमः

समदर्शी

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१०८ ॐ समाय नमः

सर्वसिद्ध

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१०९ ॐ अमोघाय नमः

पक्षपात रहित

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

११० ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः

अमोघ फलदाता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१११ ॐ वृषकर्मने नमः

कमल नयन

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

११२ ॐ वृषाकृतये नमः

धर्म रूपी कर्म करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

११३ ॐ रुद्राय नमः

धर्म स्वरूप आकृति

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

११४ ॐ बहुशिरने नमः

दुःख दूर करने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

११५ ॐ बभ्रवे नमः

अनेक शीश वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

श्रीविष्णुसहस्रनाम स्वाध्याय
(आदि शंकर भाष्य)

११६ ॐ विश्वयोनये नमः
विश्व के पोषणकर्ता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

११७ ॐ शुचिश्रवने नमः
विश्व का कारण

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

११८ ॐ अमृताय नमः
पवित्र कीर्ति वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

११९ ॐ शाश्वतस्थाणवे नमः
अमर स्वरूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१२० ॐ वरारोहाय नमः
नित्य और स्थिर

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१२१ ॐ महातपने नमः

परम उत्तम आश्रय

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१२२ ॐ सर्वगाय नमः

परम तपस्वी

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

१२३ ॐ सर्वविद्भानवे नमः

सर्वव्यापी

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

१२४ ॐ विश्वक्सेनाय नमः

सर्वज्ञ प्रकाशक

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

१२५ ॐ जनार्दनाय नमः

जिसके सामने सेना टिक न सके

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

१२६ ॐ वेदाय नमः

दुष्टों को दण्ड देने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१२७ ॐ वेदविद् नमः

ज्ञान स्वरूप

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

१२८ ॐ अव्यंगाय नमः

वेदों के ज्ञाता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

१२९ ॐ वेदांगाय नमः

दोषरहित

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१३० ॐ वेदविते नमः

वेदांग स्वरूप

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

१३१ ॐ कवये नमः

वेदों के ज्ञाता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१३२ ॐ लोकाध्यक्षाय नमः

क्रान्तदर्शी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१३३ ॐ सुराध्यक्षाय नमः

लोकों के अध्यक्ष

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१३४ ॐ धर्माध्यक्षाय नमः

देवताओं के अध्यक्ष

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

१३५ ॐ कृताकृताय नमः

धर्म के अध्यक्ष

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१३६ ॐ चतुरात्मने नमः

कार्य-कारण से परे

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

१३७ ॐ चतुर्व्यूहाय नमः

चार रूपों वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

१३८ ॐ चतुर्दंष्ट्राय नमः

चार व्यूहों वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१३९ ॐ चतुर्भुजाय नमः

चार दंष्ट्रों वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१४० ॐ भ्राजिष्णवे नमः

चतुर्भुजधारी

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

१४१ ॐ भोजनाय नमः

प्रकाशमान

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१४२ ॐ भोक्त्रे नमः

प्रकृति का भोग्य रूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

१४३ ॐ सहिष्णवे नमः

भोक्ता

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

१४४ ॐ जगदादिजाय नमः

क्षमाशील

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

१४५ ॐ अनघाय नमः

ब्रह्मांड के आदि पुरुष

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१४६ ॐ विजयाय नमः

पापरहित

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

१४७ ॐ जेत्रे नमः

विजय स्वरूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१४८ ॐ विश्वयोनये नमः

सर्वविजेता

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

१४९ ॐ पुनर्वसवे नमः

विश्व का कारण

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१५० ॐ उपेन्द्राय नमः

पुनः निवास देने वाले

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

१५१ ॐ वामनाय नमः

इन्द्र के भ्राता

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१५२ ॐ प्रांशवे नमः

वामन अवतार

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

१५३ ॐ अमोघाय नमः

विशालकाय

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१५४ ॐ शुचये नमः

अमोघ फलदाता

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

१५५ ॐ ऊर्जितशासनाय नमः

परम पवित्र

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१५६ ॐ अतीन्द्राय नमः

अति बलशाली

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१५७ ॐ संग्रहाय नमः

इन्द्र से परे

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१५८ ॐ सर्गाय नमः

सबको समेटने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

१५९ ॐ धृतात्मने नमः

सृष्टि रूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१६० ॐ नियमाय नमः

स्वयं को धारण करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

१६१ ॐ यमाय नमः

नियन्त्रक

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१६२ ॐ वेद्याय नमः

शासक

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१६३ ॐ वैद्याय नमः

जानने योग्य

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१६४ ॐ सदायोगिने नमः

परम चिकित्सक

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

१६५ ॐ वीरहने नमः

नित्य योगी

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

१६६ ॐ माधवाय नमः

दुष्टों के विनाशक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१६७ ॐ मधवे नमः

लक्ष्मीपति

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१६८ ॐ अतीन्द्रियाय नमः

मधुर स्वरूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१६९ ॐ महामयाय नमः

इन्द्रियों से परे

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१७० ॐ महोत्साहाय नमः

महामायावी

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

१७१ ॐ महाबलाय नमः

परम उत्साही

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१७२ ॐ महाबुद्धये नमः

महान बलशाली

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

१७३ ॐ महावीर्याय नमः

परम बुद्धिमान

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१७४ ॐ महाशक्तये नमः

परम पराक्रमी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१७५ ॐ महाद्युतये नमः

परम शक्तिमान

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

१७६ ॐ अनिर्देश्यवपवे नमः

परम तेजस्वी

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

१७७ ॐ श्रीमते नमः

अवर्णनीय रूप

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

१७८ ॐ अमेयात्मने नमः

लक्ष्मीपति

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

१७९ ॐ महाद्रिधृक् नमः

असीम बुद्धि वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१८० ॐ महेष्वासाय नमः

गोवर्धनधारी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१८१ ॐ महीभर्त्रे नमः

महान धनुर्धारी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१८२ ॐ श्रीनिवासाय नमः

पृथ्वी के स्वामी

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

१८३ ॐ सतां गतये नमः

लक्ष्मी के वास

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१८४ ॐ अनिरुद्धाय नमः

सज्जनों की गति

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

१८५ ॐ सुरानन्दाय नमः

अजेय

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१८६ ॐ गोविन्दाय नमः

देवताओं को आनंद देने वाले

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

१८७ ॐ गोविदां पतये नमः

गौ और वेदों के ज्ञाता

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

१८८ ॐ मरीचये नमः

ज्ञानियों के स्वामी

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

१८९ ॐ दमनाय नमः

तेज स्वरूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१९० ॐ हंसाय नमः

दमन करने वाले

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

१९१ ॐ सुपर्णाय नमः

हंस स्वरूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१९२ ॐ भुजगोत्तमाय नमः

सुन्दर पंखों वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१९३ ॐ हिरण्यनाभाय नमः

शेषनाग स्वरूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

१९४ ॐ सुतपने नमः

स्वर्ण नाभि वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

१९५ ॐ पद्मनाभाय नमः

महान तपस्वी

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

१९६ ॐ प्रजापतये नमः

कमल नाभि

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

१९७ ॐ अमृत्यवे नमः

प्रजा के स्वामी

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

१९८ ॐ सर्वदृक् नमः

मृत्युहीन

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

१९९ ॐ सिंहाय नमः

सब देखने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२०० ॐ सन्धात्रे नमः

सिंह स्वरूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२०१ ॐ सन्धिमते नमः

जोड़ने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

२०२ ॐ स्थिराय नमः

जुड़े रहने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२०३ ॐ अजाय नमः

अचल सत्य

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२०४ ॐ दुर्मर्षणाय नमः

अजन्मा

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

२०५ ॐ शास्त्रे नमः

असह्य वेग वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२०६ ॐ विश्रुतात्मने नमः

शासक व शिक्षक

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

२०७ ॐ सुरारिहने नमः

विख्यात आत्मा

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

२०८ ॐ गुरवे नमः

देवताओं के शत्रुओं के विनाशक

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२०९ ॐ गुरुतमाय नमः

परम गुरु

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२१० ॐ धाम नमः

गुरुओं के गुरु

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

२११ ॐ सत्याय नमः

परम प्रकाश धाम

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२१२ ॐ सत्यपराक्रमाय नमः

परम सत्य

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२१३ ॐ निमिषाय नमः

सत्य पराक्रम वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

२१४ ॐ अनिमिषाय नमः

योग निद्रा में लीन

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२१५ ॐ स्रग्विणे नमः

सदा जाग्रत

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२१६ ॐ वाचस्पतिरुदारधिये नमः

वैजयंती माला धारी

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

२१७ ॐ अग्रण्ये नमः

वाणी और विशाल बुद्धि के स्वामी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२१८ ॐ ग्रामण्ये नमः

मार्गदर्शक

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२१९ ॐ श्रीमते नमः

समूह के स्वामी

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

२२० ॐ न्यायाय नमः

लक्ष्मीपति

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२२१ ॐ नेत्रे नमः

न्याय स्वरूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२२२ ॐ समीरणाय नमः

सृष्टि संचालक

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

२२३ ॐ सहस्रमूर्धने नमः

वायु रूप संचालक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२२४ ॐ विश्वात्मने नमः

सहस्र शीश वाले

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

२२५ ॐ सहस्राक्षाय नमः

विश्व की आत्मा

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

२२६ ॐ सहस्रपाद् नमः

सहस्र नेत्र वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२२७ ॐ आवर्तनाय नमः

सहस्र चरण वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२२८ ॐ निवृत्तात्मने नमः

संसार चक्र के संचालक

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

२२९ ॐ संवृताय नमः

सांसारिक बंधनों से मुक्त

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२३० ॐ सम्प्रमर्दनाय नमः

अगोचर सत्य

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

२३१ ॐ अहः संवर्तकाय नमः

विनाशक

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

२३२ ॐ वह्नये नमः

काल नियामक

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२३३ ॐ अनिलाय नमः

अग्नि स्वरूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२३४ ॐ धरणीधराय नमः

वायु स्वरूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

२३५ ॐ सुप्रसादाय नमः

पृथ्वी धारक

यह नाम कोमलता, शांति और अभय प्रदान करने वाले कमल के समान कोमल चरणों का सूचक है। ध्यान के मार्ग पर, यह गुण अशांत चित्त को शीतलता और सुरक्षा प्रदान करता है।

इस नाम के मनन से साधक को भय से मुक्ति और दिव्य करुणा की अनुभूति होती है।

२३६ ॐ प्रसन्नात्मने नमः

परम कृपालु

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२३७ ॐ विश्वधृक् नमः

सदा प्रसन्न चित्त

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

२३८ ॐ विश्वभुक् नमः

विश्व रक्षक

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२३९ ॐ विभवे नमः

विश्व उपभोक्ता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२४० ॐ सत्कर्त्रे नमः

सर्वव्यापी स्वामी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

२४१ ॐ सत्कृताय नमः

सज्जनों का सत्कार करने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२४२ ॐ साधवे नमः

पूजनीय

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२४३ ॐ जह्नवे नमः

सरल व न्यायप्रिय

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

२४४ ॐ नारायणाय नमः

प्रलयकर्ता

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

२४५ ॐ नराय नमः

परम आश्रय

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

२४६ ॐ असंख्येयाय नमः

अविनाशी मार्गदर्शक

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

२४७ ॐ अप्रमेयात्मने नमः

अनंत रूप वाले

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

२४८ ॐ विशिष्टाय नमः

बुद्धि से परे

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२४९ ॐ शिष्टकृते नमः

सर्वश्रेष्ठ

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

२५० ॐ शुचये नमः

सदाचार के प्रवर्तक

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२५१ ॐ सिद्धार्थाय नमः

परम पवित्र

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२५२ ॐ सिद्धसंकल्पाय नमः

पूर्ण काम

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

२५३ ॐ सिद्धिदाय नमः

सत्य संकल्प वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२५४ ॐ सिद्धिसाधनाय नमः

सिद्धिदाता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२५५ ॐ वृषाहिणे नमः

सिद्धि के साधन

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

२५६ ॐ वृषभाय नमः

धर्म स्वरूप प्रकाश

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२५७ ॐ विष्णवे नमः

धर्म स्वरूप

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

२५८ ॐ वृषपर्वने नमः

सर्वव्यापक

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

२५९ ॐ वृषोदराय नमः

धर्म की सीढ़ी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२६० ॐ वर्धनाय नमः

जिसके उदर से सृष्टि का उदय हो

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२६१ ॐ वर्धमानाय नमः

बढ़ाने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

२६२ ॐ विविक्ताय नमः

सदा वृद्धिशील

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२६३ ॐ श्रुतिसागराय नमः

परम शुद्ध

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२६४ ॐ सुभुजाय नमः

श्रुतियों के सागर

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

२६५ ॐ दुर्धराय नमः

सुन्दर भुजाओं वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२६६ ॐ वाग्मिने नमः

धारण करने में कठिन

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२६७ ॐ महेन्द्राय नमः

परम वक्ता

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

२६८ ॐ वसुदाय नमः

इन्द्रों के इन्द्र

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२६९ ॐ वसवे नमः

धनदाता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२७० ॐ नैकरूपाय नमः

सर्वनिवास

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

२७१ ॐ बृहद्भूपाय नमः

अनंत रूपों वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२७२ ॐ शिपिविष्टाय नमः

विशाल रूप वाले

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

२७३ ॐ प्रकाशनाय नमः

किरणों में निवास करने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

२७४ ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः

सबको प्रकाशित करने वाले

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

२७५ ॐ प्रकाशात्मने नमः

ओज, तेज और द्युति के धारक

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२७६ ॐ प्रतापनाय नमः

प्रकाश स्वरूप आत्मा

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

२७७ ॐ ऋद्धाय नमः

ब्रह्मांड को तपाने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२७८ ॐ स्पष्टाक्षराय नमः

परम समृद्ध

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२७९ ॐ मन्त्राय नमः

स्पष्ट ओंकार स्वरूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

२८० ॐ चन्द्रांशवे नमः

मन्त्र स्वरूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२८१ ॐ भास्करद्युतये नमः

शीतल चन्द्र किरणों वाले

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

२८२ ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः

सूर्य के समान तेजस्वी

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

२८३ ॐ भानवे नमः

चन्द्रमा के उत्पत्ति कारण

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२८४ ॐ शशबिन्दवे नमः

प्रकाशक

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२८५ ॐ सुरेश्वराय नमः

चन्द्रमा स्वरूप रक्षक

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

२८६ ॐ औषधाय नमः

देवताओं के राजा

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२८७ ॐ जगतः सेतवे नमः

भवसागर की औषधि

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

२८८ ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय नमः

संसार का पुल

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

२८९ ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय नमः

सत्य धर्म और पराक्रम वाले

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

२९० ॐ पवनाय नमः

त्रिकाल के स्वामी

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२९१ ॐ पावनाय नमः

वायु स्वरूप वायु

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

२९२ ॐ अनलाय नमः

पवित्र करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

२९३ ॐ कामहने नमः

अग्नि स्वरूप अग्नि

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

२९४ ॐ कामकृते नमः

कामनाओं के नाशक

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

२९५ ॐ कान्ताय नमः

कामनाओं को पूर्ण करने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२९६ ॐ कामाय नमः

परम सुन्दर

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

२९७ ॐ कामप्रदाय नमः

कामना योग्य

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

२९८ ॐ प्रभवे नमः

इच्छा पूर्ण करने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

२९९ ॐ युगादिकृते नमः

सर्वसमर्थ

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३०० ॐ युगावर्ताय नमः

युग प्रवर्तक

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

श्रीविष्णुसहस्रनाम स्वाध्याय
(आदि शंकर भाष्य)

३०१ ॐ नैकमायाय नमः
युगों को बदलने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३०२ ॐ महाशनाय नमः
अनेक माया वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३०३ ॐ अदृश्याय नमः
महाभोक्ता

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

३०४ ॐ व्यक्तरूपाय नमः
अदृश्य

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

३०५ ॐ सहस्रजिते नमः
स्पष्ट व्यक्त रूप वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३०६ ॐ अनन्तजिते नमः

सहस्रों को जीतने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३०७ ॐ इष्टाय नमः

अनंत को जीतने वाले

यह नाम कोमलता, शांति और अभय प्रदान करने वाले कमल के समान कोमल चरणों का सूचक है। ध्यान के मार्ग पर, यह गुण अशांत चित्त को शीतलता और सुरक्षा प्रदान करता है।

इस नाम के मनन से साधक को भय से मुक्ति और दिव्य करुणा की अनुभूति होती है।

३०८ ॐ अविशिष्टाय नमः

परम प्रिय

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

३०९ ॐ शिष्टेष्टाय नमः

सबके अंतर्यामी

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

३१० ॐ शिखण्डिने नमः

शिष्ट पुरुषों के प्रिय

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

३११ ॐ नहुषाय नमः

मयूर पंख धारी

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३१२ ॐ वृषाय नमः

माया से बांधने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३१३ ॐ क्रोधहने नमः

धर्म रूप

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

३१४ ॐ क्रोधकृते नमः

क्रोध के विनाशक

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३१५ ॐ कर्त्रे नमः

दुष्टों पर क्रोध करने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

३१६ ॐ विश्वबाहवे नमः

विश्वव्यापी भुजाओं वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

३१७ ॐ महीधराय नमः

पृथ्वी को धारण करने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३१८ ॐ अच्युताय नमः

च्युत न होने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३१९ ॐ प्रथिताय नमः

अति प्रसिद्ध

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३२० ॐ प्राणाय नमः

प्राण स्वरूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३२१ ॐ प्राणदाय नमः

प्राणदाता

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

३२२ ॐ वासवानुजाय नमः

इन्द्र के छोटे भाई

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

३२३ ॐ अपां निधये नमः

समुद्र स्वरूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३२४ ॐ अधिष्ठानाय नमः

सृष्टि के आधार

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३२५ ॐ अप्रमत्ताय नमः

सदा सावधान

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

३२६ ॐ प्रतिष्ठिताय नमः

स्वयं में स्थित

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३२७ ॐ स्कन्दाय नमः

अमृत रूप प्रवाह

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

३२८ ॐ स्कन्दधराय नमः

सृष्टि का भार उठाने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

३२९ ॐ धुर्याय नमः

सृष्टि का भार उठाने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३३० ॐ वरदाय नमः

वरदान देने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३३१ ॐ वायुवाहनाय नमः

वायु को चलाने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३३२ ॐ वासुदेवाय नमः

सर्वव्यापी प्रभु

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३३३ ॐ बृहद्भानवे नमः

महान तेजस्वी

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

३३४ ॐ आदिदेवाय नमः

प्रथम देव

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

३३५ ॐ पुरन्दराय नमः

दुष्टों के नगरों के विनाशक

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

३३६ ॐ अशोकाय नमः

शोकरहित

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३३७ ॐ तारणाय नमः

तारने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३३८ ॐ ताराय नमः

तारक मन्त्र

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३३९ ॐ शूराय नमः

वीर

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

३४० ॐ शौरये नमः

शूरवंशज

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

३४१ ॐ जनेश्वराय नमः

मनुष्यों के स्वामी

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

३४२ ॐ अनुकूलाय नमः

भक्तों के हितैषी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३४३ ॐ शतावर्ताय नमः

अनेक रूपों में प्रकट होने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३४४ ॐ पद्मिने नमः

कमलधारी

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३४५ ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः

कमल नयन

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

३४६ ॐ पद्मनाभाय नमः

कमल नाभि

यह नाम कोमलता, शांति और अभय प्रदान करने वाले कमल के समान कोमल चरणों का सूचक है। ध्यान के मार्ग पर, यह गुण अशांत चित्त को शीतलता और सुरक्षा प्रदान करता है।

इस नाम के मनन से साधक को भय से मुक्ति और दिव्य करुणा की अनुभूति होती है।

३४७ ॐ अरविन्दाक्षाय नमः

कमल नयन

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३४८ ॐ पद्मगर्भाय नमः

कमल के गर्भ में स्थित

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

३४९ ॐ शरीरभृते नमः

शरीर के पोषणकर्ता

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३५० ॐ महर्धये नमः

परम वैभवशाली

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३५१ ॐ ऋद्धाय नमः

परम समृद्ध

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

३५२ ॐ वृद्धात्मने नमः

अति प्राचीन आत्मा

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

३५३ ॐ महाक्षाय नमः

विशाल नेत्र वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३५४ ॐ गरुडध्वजाय नमः

गरुड़ ध्वज धारी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३५५ ॐ अतुलाय नमः

अतुलनीय

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३५६ ॐ शरभाय नमः

शरीरों में आत्मा रूप

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

३५७ ॐ भीमाय नमः

भयानक पराक्रम वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

३५८ ॐ समयज्ञाय नमः

समय और मर्यादा के ज्ञाता

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

३५९ ॐ हविर्हरये नमः

यज्ञ भाग ग्रहण करने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३६० ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः

समस्त शुभ लक्षणों के आधार

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

३६१ ॐ लक्ष्मीवते नमः

लक्ष्मी के स्वामी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३६२ ॐ समितिञ्जयाय नमः

युद्ध विजेता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३६३ ॐ विक्षराय नमः

अविनाशी

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

३६४ ॐ रोहिताय नमः

मत्स्य अवतार

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

३६५ ॐ मार्गाय नमः

परम मार्ग

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३६६ ॐ हेतवे नमः

सृष्टि का कारण

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३६७ ॐ दामोदराय नमः

उदर पर रस्सी वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३६८ ॐ सहाय नमः

सहनशील

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

३६९ ॐ महीधराय नमः

पृथ्वी को धारण करने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

३७० ॐ महाभागाय नमः

परम भाग्यशाली

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

३७१ ॐ वेगवते नमः

अति तीव्र गति वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३७२ ॐ अमिताशनाय नमः

असीम भोग करने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३७३ ॐ उद्भवाय नमः

उत्पत्ति स्थान

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

३७४ ॐ क्षोभणाय नमः

हलचल पैदा करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३७५ ॐ देवाय नमः

क्रीड़ामय दिव्य प्रकाश

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

३७६ ॐ श्रीगर्भाय नमः

लक्ष्मी को गर्भ में रखने वाले

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

३७७ ॐ परमेश्वराय नमः

परम शासक

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

३७८ ॐ करणाय नमः

परम साधन

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३७९ ॐ कारणाय नमः

मूल कारण

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३८० ॐ कर्त्रे नमः

सृष्टिकर्ता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३८१ ॐ विकर्त्रे नमः

विविध रूपों के कर्ता

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

३८२ ॐ गहनाय नमः

अगाध रहस्य

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

३८३ ॐ गुहाय नमः

हृदय गुहा में स्थित

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३८४ ॐ व्यवसायाय नमः

निश्चय स्वरूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३८५ ॐ व्यवस्थानाय नमः

व्यवस्थापक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३८६ ॐ संस्थानाय नमः

अंतिम लय स्थान

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३८७ ॐ स्थानदाय नमः

परम पद प्रदाता

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

३८८ ॐ ध्रुवाय नमः

नित्य अचल

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

३८९ ॐ परर्द्धये नमः

परम विभूति

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३९० ॐ परमस्पष्टाय नमः

परम प्रत्यक्ष

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३९१ ॐ तुष्टाय नमः

सदा संतुष्ट

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३९२ ॐ पुष्टाय नमः

पूर्ण समृद्ध

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३९३ ॐ शुभेक्षणाय नमः

कल्याणकारी दृष्टि वाले

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

३९४ ॐ रामाय नमः

रमणीय आनंद रूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

३९५ ॐ विरामाय नमः

परम विश्राम

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

३९६ ॐ विरजाय नमः

मलरहित

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

३९७ ॐ मार्गाय नमः

परम मार्ग

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

३९८ ॐ नेयाय नमः

ज्ञान द्वारा प्राप्य

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

३९९ ॐ नयाय नमः

मार्गदर्शक

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४०० ॐ अनयाय नमः

जिसका कोई नियन्ता न हो

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

श्रीविष्णुसहस्रनाम स्वाध्याय

(आदि शंकर भाष्य)

४०१ ॐ वीराय नमः

पराक्रमी

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

४०२ ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः

शक्तिमानों में श्रेष्ठ

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४०३ ॐ धर्माय नमः

धर्म स्वरूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४०४ ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः

धर्म के सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

४०५ ॐ वैकुण्ठाय नमः

बाधा रहित मार्गदाता

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

४०६ ॐ पुरुषाय नमः

परम पुरुष

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

४०७ ॐ प्राणाय नमः

प्राण स्वरूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

४०८ ॐ प्राणदाय नमः

प्राणदाता

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४०९ ॐ प्रणवाय नमः

ओंकार स्वरूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४१० ॐ पृथवे नमः

विशाल विराट रूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४११ ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

ब्रह्मांड के गर्भ

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

४१२ ॐ शत्रुघ्नाय नमः

शत्रुओं के नाशक

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

४१३ ॐ व्याप्ताय नमः

सर्वत्र समाया हुआ

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

४१४ ॐ वायवे नमः

वायु रूप जीवन

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४१५ ॐ अधोक्षजाय नमः

इन्द्रिय जनित ज्ञान से परे

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४१६ ॐ ऋतवे नमः

काल चक्र रूप ऋतु

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४१७ ॐ सुदर्शनाय नमः

सुन्दर दर्शन वाले

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

४१८ ॐ कालाय नमः

काल स्वरूप

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

४१९ ॐ परमेष्ठिणे नमः

हृदय कमल में स्थित

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

४२० ॐ परिग्रहाय नमः

शरणदाताओं के रक्षक

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४२१ ॐ उग्राय नमः

भयानक रुद्र रूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४२२ ॐ संवत्सराय नमः

काल स्वरूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४२३ ॐ दक्षाय नमः

परम चतुर व कुशल

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४२४ ॐ विश्रामाय नमः

परम शांति स्थल

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

४२५ ॐ विश्वदक्षिणाय नमः

परम कुशल व दानी

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

४२६ ॐ विस्ताराय नमः

सृष्टि का विस्तार

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४२७ ॐ स्थावरस्थाणवे नमः

अचल वृक्ष के समान स्थिर

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४२८ ॐ प्रमाणाय नमः

परम साक्ष्य

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४२९ ॐ बीजमव्ययाय नमः

अविनाशी बीज

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४३० ॐ अर्थाय नमः

परम चाहने योग्य

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

४३१ ॐ अनर्थाय नमः

चाहने योग्य वस्तु से परे

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

४३२ ॐ महाकोशाय नमः

पंचकोशों से परे

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४३३ ॐ महाभोगाय नमः

परम सुख भोग वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४३४ ॐ महाधनाय नमः

परम धनी

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४३५ ॐ अनिर्विण्णाय नमः

उदासीनता रहित

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४३६ ॐ स्थविरष्ठाय नमः

विशालतम सनातन रूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

४३७ ॐ अभुवे नमः

जन्म रहित

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४३८ ॐ धर्मयूपाय नमः

धर्म का आधार स्तम्भ

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४३९ ॐ महामखाय नमः

महान यज्ञ स्वरूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४४० ॐ नक्षत्रनेमये नमः

नक्षत्र चक्र के केंद्र

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४४१ ॐ नक्षत्रिणे नमः

तारामंडल के स्वामी

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

४४२ ॐ क्षमाय नमः

परम सहनशील

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

४४३ ॐ क्षामाय नमः

परम शांत स्थिति

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

४४४ ॐ समीहनाय नमः

शुभ चेष्टा वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४४५ ॐ यज्ञाय नमः

यज्ञ स्वरूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४४६ ॐ इज्याय नमः

पूजनीय प्रभु

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४४७ ॐ महेज्याय नमः

सर्वोच्च पूजनीय

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४४८ ॐ क्रतवे नमः

यज्ञ संकल्प

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

४४९ ॐ सत्राय नमः

सज्जनों के रक्षक

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

४५० ॐ सतां गतये नमः

सज्जनों की गति

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४५१ ॐ सर्वदर्शिणे नमः

सब कुछ देखने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४५२ ॐ विमुक्तात्मने नमः

नित्य मुक्त आत्मा

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

४५३ ॐ सर्वज्ञाय नमः

सबके ज्ञाता

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४५४ ॐ ज्ञानमुत्तमाय नमः

सर्वोच्च ज्ञान

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

४५५ ॐ सुव्रताय नमः

सत्य व्रत वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

४५६ ॐ सुमुखाय नमः

सुन्दर मुख वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४५७ ॐ सूक्ष्माय नमः

अति सूक्ष्म

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४५८ ॐ सुघोषाय नमः

मधुर ध्वनि वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४५९ ॐ सुखदाय नमः

सुखदाता

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४६० ॐ सुहृते नमः

निःस्वार्थ मित्र

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

४६१ ॐ मनोहराय नमः

मन को हरने वाले

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

४६२ ॐ जितक्रोधाय नमः

क्रोध को जीतने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४६३ ॐ वीरबाहवे नमः

वीर भुजाओं वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४६४ ॐ विदारणाय नमः

अधर्म का विनाश करने वाले

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

४६५ ॐ स्वापनाय नमः

योग निद्रा में सुलाने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४६६ ॐ स्ववशाय नमः

परम स्वतन्त्र

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

४६७ ॐ व्यापिने नमः

सर्वव्यापी

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

४६८ ॐ नैकात्मने नमः

अनेक रूपों वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४६९ ॐ नैककर्मकृते नमः

विविध कर्म करने वाले

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

४७० ॐ वत्सराय नमः

स्नेह के निवास स्थान

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४७१ ॐ वत्सलाय नमः

भक्त वत्सल

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४७२ ॐ वत्सिने नमः

भक्तों के पालक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४७३ ॐ रत्नगर्भाय नमः

रत्नों को गर्भ में रखने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४७४ ॐ धनेश्वराय नमः

धन के स्वामी

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

४७५ ॐ धर्मगुप् नमः

धर्म के रक्षक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४७६ ॐ धर्मकृते नमः

धर्म के प्रवर्तक

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४७७ ॐ धर्मिणे नमः

धर्म के धारक

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४७८ ॐ सते नमः

सत्य अस्तित्व

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

४७९ ॐ असते नमः

परिवर्तनशील जगत

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४८० ॐ क्षराय नमः

परिवर्तनशील रूप

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

४८१ ॐ अक्षराय नमः

अविनाशी तत्व

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

४८२ ॐ अविज्ञात्रे नमः

जीव भाव से परे

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४८३ ॐ सहस्रांशवे नमः

सहस्र किरणों वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

४८४ ॐ विधात्रे नमः

भाग्य विधाता

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

४८५ ॐ कृतलक्षणाय नमः

वेद शास्त्रों के रचयिता

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

४८६ ॐ गभस्तिनेमये नमः

किरण रूप चक्र के केंद्र

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

४८७ ॐ सत्त्वस्थाय नमः

सत्त्व गुण में स्थित

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४८८ ॐ सिंहाय नमः

सिंह स्वरूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४८९ ॐ भूतमहेश्वराय नमः

प्राणियों के महान ईश्वर

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

४९० ॐ आदिदेवाय नमः

प्रथम देव

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

४९१ ॐ महादेवाय नमः

महान देव

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

४९२ ॐ देवेशाय नमः

देवताओं के स्वामी

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

४९३ ॐ देवभृद्गुरवे नमः

देवताओं के पोषक और गुरु

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४९४ ॐ उत्तराय नमः

भवसागर से तारने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

४९५ ॐ गोपतये नमः

पृथ्वी व गौ के स्वामी

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

४९६ ॐ गोप्त्रे नमः

परम रक्षक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

४९७ ॐ ज्ञानगम्याय नमः

ज्ञान द्वारा प्राप्य

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

४९८ ॐ पुरातनाय नमः

सनातन काल से विद्यमान

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

४९९ ॐ शरीरभूतभृते नमः

पंचमहाभूतों के पोषक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५०० ॐ भोक्त्रे नमः

भोक्ता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५०१ ॐ कपीन्द्राय नमः

वानर राज

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

५०२ ॐ भूरिदक्षिणाय नमः

महान यज्ञ दान देने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५०३ ॐ सोमपाय नमः

यज्ञ रस ग्रहण करने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

५०४ ॐ अमृतपाय नमः

अमृत के रक्षक व भोक्ता

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५०५ ॐ सोमाय नमः

चन्द्र देव रूप अमृत

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५०६ ॐ पुरुजिते नमः

अनेकों को जीतने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५०७ ॐ पुरुसत्तमाय नमः

पुरुषों में श्रेष्ठ

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५०८ ॐ विनयाय नमः

दुष्टों का दमन करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५०९ ॐ जयाय नमः

सर्वविजेता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

५१० ॐ सत्यसन्धाय नमः

सत्य प्रतिज्ञा वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५११ ॐ दाशार्हाय नमः

यदुवंशी आराधना योग्य

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

५१२ ॐ सात्वतांपतये नमः

यादवों के स्वामी

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

५१३ ॐ जीवाय नमः

प्राण रूप चेतना

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५१४ ॐ विनयिता साक्षिणे नमः

विनय भाव के साक्षी

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

५१५ ॐ मुकुन्दाय नमः

मुक्तिदाता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

५१६ ॐ अमितविक्रमाय नमः

असीम पराक्रमी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५१७ ॐ अम्भोनिधये नमः

समुद्र स्वरूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५१८ ॐ अनन्तात्मने नमः

अनंत रूपों वाली आत्मा

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

५१९ ॐ महोदधिशयाय नमः

क्षीरसागर शयन करने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५२० ॐ अन्तकाय नमः

प्रलयकर्ता

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

५२१ ॐ अजाय नमः

अजन्मा

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५२२ ॐ महार्हाय नमः

परम पूजनीय

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५२३ ॐ स्वाभाव्याय नमः

स्वयं सिद्ध सत्य

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५२४ ॐ जितामित्राय नमः

शत्रुओं को जीतने वाले

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

५२५ ॐ प्रमोदनाय नमः

आनंद देने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५२६ ॐ आनन्दाय नमः

आनंद स्वरूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५२७ ॐ नन्दनाय नमः

प्रसन्न करने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

५२८ ॐ नन्दाय नमः

परम समृद्ध

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५२९ ॐ सत्यधर्मने नमः

सत्य धर्म के धारक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५३० ॐ त्रिविक्रमाय नमः

तीनों लोकों को नापने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५३१ ॐ महर्षिः कपिलाचार्याय नमः

सांख्य दर्शन के प्रणेता

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५३२ ॐ कृतज्ञाय नमः

कृतज्ञ

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५३३ ॐ मेदिनीपतये नमः

पृथ्वी के स्वामी

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

५३४ ॐ त्रिपदाय नमः

तीन पग वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५३५ ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नमः

देवताओं के स्वामी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५३६ ॐ महाशृंगाय नमः

महान सींग वाले मत्स्य अवतार

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५३७ ॐ कृतान्तकृते नमः

काल के विनाशक

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

५३८ ॐ महावराहाय नमः

महान वराह अवतार

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५३९ ॐ गोविन्दाय नमः

गौ और वेदों के ज्ञाता

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

५४० ॐ सुषेणाय नमः

दिव्य सेना वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५४१ ॐ कनकांगदिने नमः

स्वर्ण बाजूबंद धारी

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५४२ ॐ गुह्याय नमः

रहस्यमय अगोचर

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५४३ ॐ गभीराय नमः

अगाध गंभीर

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५४४ ॐ गहनाय नमः

अगाध रहस्य

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५४५ ॐ गुप्ताय नमः

रहस्य रूप में छिपा हुआ

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

५४६ ॐ चक्रगदाधराय नमः

चक्र और गदा धारी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५४७ ॐ वेधने नमः

विधाता सृष्टिकर्ता

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

५४८ ॐ स्वांगाय नमः

सुन्दर दिव्य अंग वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५४९ ॐ अजिताय नमः

अजेय

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५५० ॐ कृष्णाय नमः

आनंद स्वरूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५५१ ॐ दृढाय नमः

निश्चय संकल्प

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

५५२ ॐ संकर्षणोऽच्युताय नमः

संकर्षण और अच्युत रूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५५३ ॐ वरुणाय नमः

वरुण देव रूप नियंत्रक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५५४ ॐ वारुणाय नमः

वरुण के पुत्र रूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५५५ ॐ वृक्षाय नमः

कल्पवृक्ष स्वरूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५५६ ॐ पुष्कराक्षाय नमः

कमल नयन

यह नाम कोमलता, शांति और अभय प्रदान करने वाले कमल के समान कोमल चरणों का सूचक है। ध्यान के मार्ग पर, यह गुण अशांत चित्त को शीतलता और सुरक्षा प्रदान करता है।

इस नाम के मनन से साधक को भय से मुक्ति और दिव्य करुणा की अनुभूति होती है।

५५७ ॐ महामनने नमः

विशाल मन वाले

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

५५८ ॐ भगवते नमः

षडैश्वर्य सम्पन्न

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५५९ ॐ भगहने नमः

ऐश्वर्य का लय करने वाले

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

५६० ॐ आनन्दिने नमः

आनंद देने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५६१ ॐ वनमालिने नमः

वनमाला धारी

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५६२ ॐ हलायुधाय नमः

हल धारी बलराम रूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५६३ ॐ आदित्याय नमः

सूर्य स्वरूप

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

५६४ ॐ ज्योतिरादित्याय नमः

तेजस्वी सूर्य

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

५६५ ॐ सहिष्णवे नमः

क्षमाशील

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

श्रीविष्णुसहस्रनाम स्वाध्याय
(आदि शंकर भाष्य)

५६६ ॐ गतिसत्तमाय नमः

सर्वोच्च आश्रय

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५६७ ॐ सुधन्वने नमः

दिव्य धनुष धारी

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५६८ ॐ खण्डपरशवे नमः

परशुराम अवतार

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५६९ ॐ दारुणाय नमः

भयानक दण्डदाता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

५७० ॐ द्रविणप्रदाय नमः

धन और ज्ञान दाता

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५७१ ॐ दिविस्पृक् नमः

आकाश को छूने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५७२ ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः

ज्ञान का विस्तार करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५७३ ॐ वाचस्पतिरयोनिजाय नमः

अयोनिज वाणी के स्वामी

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

५७४ ॐ त्रिसामने नमः

तीनों सामवेदों द्वारा प्रशंसित

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५७५ ॐ सामगाय नमः

सामगान करने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

५७६ ॐ साम नमः

सामवेद स्वरूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५७७ ॐ निर्वाणाय नमः

परम मोक्ष रूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५७८ ॐ भेषजाय नमः

भवसागर की दवा

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५७९ ॐ भिषक् नमः

परम वैद्य

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५८० ॐ संन्यासकृते नमः

वैराग्य के प्रवर्तक

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

५८१ ॐ शमाय नमः

मन की शांति रूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

५८२ ॐ शान्ताय नमः

परम शांत

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

५८३ ॐ निष्ठने नमः

अंतिम आश्रय स्थिति

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५८४ ॐ शान्तये नमः

शांति स्वरूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५८५ ॐ परायणाय नमः

सर्वोच्च आश्रय स्थल

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५८६ ॐ शुभांगाय नमः

सुन्दर कल्याणकारी विग्रह

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५८७ ॐ शान्तिदाय नमः

शांतिदाता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

५८८ ॐ स्रष्ट्रे नमः

सृष्टिकर्ता

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

५८९ ॐ कुमुदाय नमः

पृथ्वी को आनंद देने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५९० ॐ कुवलेशयाय नमः

शेषनाग शय्या पर सोने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५९१ ॐ गोहिताय नमः

गौ व पृथ्वी के हितैषी

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५९२ ॐ गोपतये नमः

पृथ्वी व गौ के स्वामी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

५९३ ॐ गोप्त्रे नमः

परम रक्षक

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

५९४ ॐ वृषभाक्षाय नमः

धर्म रूपी नेत्र वाले

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

५९५ ॐ वृषप्रियाय नमः

धर्म प्रेमी

यह नाम कोमलता, शांति और अभय प्रदान करने वाले कमल के समान कोमल चरणों का सूचक है। ध्यान के मार्ग पर, यह गुण अशांत चित्त को शीतलता और सुरक्षा प्रदान करता है।

इस नाम के मनन से साधक को भय से मुक्ति और दिव्य करुणा की अनुभूति होती है।

५९६ ॐ अनिवर्तिणे नमः

युद्ध से पीछे न हटने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

५९७ ॐ निवृत्तात्मने नमः

सांसारिक बंधनों से मुक्त

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

५९८ ॐ संक्षेप्त्रे नमः

सृष्टि का संकोच करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

५९९ ॐ क्षेमकृते नमः

कुशल क्षेम करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६०० ॐ शिवाय नमः

कल्याणकारी

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

श्रीविष्णुसहस्रनाम स्वाध्याय
(आदि शंकर भाष्य)

६०१ ॐ श्रीवत्सवक्षने नमः
श्रीवत्स चिह्न धारी

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६०२ ॐ श्रीवासाय नमः
लक्ष्मी के निवास स्थान

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

६०३ ॐ श्रीपतये नमः
लक्ष्मीपति

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

६०४ ॐ श्रीमतांवराय नमः
वैभवशालियों में श्रेष्ठ

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६०५ ॐ श्रीदाय नमः
समृद्धिदाता

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

६०६ ॐ श्रीशाय नमः

लक्ष्मी के स्वामी

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

६०७ ॐ श्रीनिवासाय नमः

लक्ष्मी के वास

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६०८ ॐ श्रीनिधये नमः

समृद्धि का भण्डार

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

६०९ ॐ श्रीविभावनाय नमः

वैभव प्रकट करने वाले

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

६१० ॐ श्रीधराय नमः

लक्ष्मी को धारण करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६११ ॐ श्रीकराय नमः

कल्याण करने वाले

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

६१२ ॐ श्रेयाय नमः

कल्याण स्वरूप मोक्ष

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

६१३ ॐ श्रीमते नमः

लक्ष्मीपति

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६१४ ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः

तीनों लोकों के आश्रय

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६१५ ॐ स्वक्षाय नमः

सुन्दर नेत्र वाले

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

६१६ ॐ स्वंगाय नमः

सुन्दर दिव्य अंग वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६१७ ॐ शतानन्दाय नमः

अनंत आनंद रूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६१८ ॐ नन्दये नमः

परम आनंद रूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

६१९ ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः

नक्षत्रों के स्वामी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

६२० ॐ विजितात्मने नमः

मन को जीतने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६२१ ॐ विधेयात्मने नमः

भक्तों के वश में होने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६२२ ॐ सत्कीर्तये नमः

सच्ची कीर्ति वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६२३ ॐ छिन्नसंशयाय नमः

संदेह दूर करने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६२४ ॐ उदीर्णाय नमः

सर्वोच्च उत्कृष्ट

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

६२५ ॐ सर्वतश्चक्षवे नमः

सब ओर नेत्र वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

६२६ ॐ अनीशाय नमः

जिसका कोई स्वामी न हो

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

६२७ ॐ शाश्वतस्थिराय नमः

नित्य स्थिर

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६२८ ॐ भूशयाय नमः

भूमि पर शयन करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६२९ ॐ भूषणाय नमः

सृष्टि की शोभा

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६३० ॐ भूतये नमः

वैभव स्वरूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

६३१ ॐ विशोकाय नमः

शोकरहित

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

६३२ ॐ शोकनाशनाय नमः

शोक दूर करने वाले

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

६३३ ॐ अर्चिष्मते नमः

तेजस्वी प्रकाश वाले

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

६३४ ॐ अर्चिताय नमः

पूजनीय सर्वपूजित

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६३५ ॐ कुम्भाय नमः

घट घट वासी

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६३६ ॐ विशुद्धात्मने नमः

परम शुद्ध आत्मा

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६३७ ॐ विशोधनाय नमः

पवित्र करने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

६३८ ॐ अनिरुद्धाय नमः

अजेय

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६३९ ॐ अप्रतिरथाय नमः

जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी न हो

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६४० ॐ प्रद्युम्नाय नमः

परम धनवान व कामदेव रूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६४१ ॐ अमितविक्रमाय नमः

असीम पराक्रमी

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६४२ ॐ कालनेमिनिहने नमः

कालनेमि का वध करने वाले

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

६४३ ॐ वीराय नमः

पराक्रमी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

६४४ ॐ शौरये नमः

शूरवंशज

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६४५ ॐ शूरजनेश्वराय नमः

वीरों के स्वामी

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

६४६ ॐ त्रिलोकात्मने नमः

तीनों लोकों की आत्मा

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

६४७ ॐ त्रिलोकेशाय नमः

तीनों लोकों के स्वामी

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

६४८ ॐ केशवाय नमः

मधुसूदन

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

६४९ ॐ केशिहने नमः

केशी का वध करने वाले

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

६५० ॐ हरये नमः

पाप हरने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६५१ ॐ कामदेवाय नमः

परम कामना योग्य

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

६५२ ॐ कामपालाय नमः

कामना पूर्ति के रक्षक

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६५३ ॐ कामिने नमः

पूर्ण काम

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६५४ ॐ कान्ताय नमः

परम सुन्दर

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

६५५ ॐ कृतागमाय नमः

शास्त्रों के रचयिता

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

६५६ ॐ अनिर्देश्यवपवे नमः

अवर्णनीय रूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६५७ ॐ विष्णवे नमः

सर्वव्यापक

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

६५८ ॐ वीराय नमः

पराक्रमी

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६५९ ॐ अनन्ताय नमः

असीम अनंत

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६६० ॐ धनञ्जयाय नमः

अर्जुन रूप धनंजय

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

६६१ ॐ ब्रह्मण्याय नमः

ब्राह्मण व ज्ञान के रक्षक

यह नाम कोमलता, शांति और अभय प्रदान करने वाले कमल के समान कोमल चरणों का सूचक है। ध्यान के मार्ग पर, यह गुण अशांत चित्त को शीतलता और सुरक्षा प्रदान करता है।

इस नाम के मनन से साधक को भय से मुक्ति और दिव्य करुणा की अनुभूति होती है।

६६२ ॐ ब्रह्मकृते नमः

सृष्टि ज्ञान प्रकट करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६६३ ॐ ब्रह्मने नमः

ब्रह्मा रूप सृष्टिकर्ता

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

६६४ ॐ ब्रह्म नमः

तप व ज्ञान को बढ़ाने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६६५ ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः

ब्रह्मज्ञान के ज्ञाता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६६६ ॐ ब्रह्मविद् नमः

वेद ज्ञान स्वरूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६६७ ॐ ब्राह्मणाय नमः

ब्रह्म चेतना के स्वामी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

६६८ ॐ ब्रह्मिणे नमः

ब्रह्म को जानने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६६९ ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः

संत पुरुषों के प्रिय

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६७० ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः

परब्रह्म परमात्मा

यह नाम कोमलता, शांति और अभय प्रदान करने वाले कमल के समान कोमल चरणों का सूचक है। ध्यान के मार्ग पर, यह गुण अशांत चित्त को शीतलता और सुरक्षा प्रदान करता है।

इस नाम के मनन से साधक को भय से मुक्ति और दिव्य करुणा की अनुभूति होती है।

६७१ ॐ महाक्रमाय नमः

विशाल डग वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६७२ ॐ महाकर्मने नमः

महान कर्म करने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

६७३ ॐ महातेजने नमः

परम तेजस्वी

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६७४ ॐ महोरगाय नमः

महान नाग रूप शेषनाग

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६७५ ॐ महाक्रतवे नमः

महान यज्ञ संकल्प

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६७६ ॐ महायज्वने नमः

महान यज्ञ करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६७७ ॐ महायज्ञाय नमः

सर्वश्रेष्ठ यज्ञ

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६७८ ॐ महाहवये नमः

महान आहुति रूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

६७९ ॐ स्तव्याय नमः

स्तुति करने योग्य

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

६८० ॐ स्तवप्रियाय नमः

स्तुति प्रिय

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६८१ ॐ स्तोत्राय नमः

स्तुति मन्त्र रूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६८२ ॐ स्तुतये नमः

प्रशंसा क्रिया

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६८३ ॐ स्तोत्रे नमः

स्तुति करने वाले स्वयं

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६८४ ॐ रणप्रियाय नमः

धर्म युद्ध प्रेमी

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

६८५ ॐ पूर्णाय नमः

परम पूर्ण

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

६८६ ॐ पूरयित्रे नमः

सबको पूर्ण करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६८७ ॐ पुण्याय नमः

परम पवित्रता रूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६८८ ॐ पुण्यकीर्तये नमः

पवित्र कीर्ति वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६८९ ॐ अनामयाय नमः

रोगरहित

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६९० ॐ मनोजवाय नमः

मन के समान तीव्र गति वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६९१ ॐ तीर्थकराय नमः

तीर्थ व शास्त्रों के रचयिता

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

६९२ ॐ वसुरेत्रे नमः

स्वर्ण रूपी वीर्य वाले

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

६९३ ॐ वसुप्रदाय नमः

धन और समृद्धि दाता

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

६९४ ॐ वसुप्रदाय नमः

धन और समृद्धि दाता

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

६९५ ॐ वासुदेवाय नमः

सर्वव्यापी प्रभु

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

६९६ ॐ वसवे नमः

सर्वनिवास

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

६९७ ॐ वसुमनने नमः

उदार मन वाले

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

६९८ ॐ हवये नमः

आहुति द्रव्य रूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

६९९ ॐ सद्गतये नमः

सज्जनों का परम लक्ष्य

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७०० ॐ सत्कृतये नमः

उत्कृष्ट क्रिया रूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७०१ ॐ सत्ते नमः

परम सत्ता अस्तित्व

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७०२ ॐ सद्भूतये नमः

सच्चा वैभव

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७०३ ॐ सत्परायणाय नमः

सत्य के परम आश्रय

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७०४ ॐ शूरसेनाय नमः

वीर सेना वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७०५ ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः

यदुवंशियों में श्रेष्ठ

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७०६ ॐ सन्निवासाय नमः

सज्जनों के निवास

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७०७ ॐ सुयामुनाय नमः

यमुना तट लीलाधारी

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७०८ ॐ भूतावासाय नमः

समस्त प्राणियों के आश्रय

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७०९ ॐ वासुदेवाय नमः

सर्वव्यापी प्रभु

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७१० ॐ सर्वासुनिलयाय नमः

समस्त प्राणों के आधार

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

७११ ॐ अनलाय नमः

अग्नि स्वरूप अग्नि

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

७१२ ॐ दर्पहने नमः

अहंकार का विनाश करने वाले

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

७१३ ॐ दर्पदाय नमः

सज्जनों को आत्मगौरव देने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७१४ ॐ दृप्ताय नमः

परम आनंद मग्न

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७१५ ॐ दुर्धराय नमः

धारण करने में कठिन

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७१६ ॐ अपराजिताय नमः

अजेय

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७१७ ॐ विश्वमूर्तये नमः

विश्व रूप विग्रह

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७१८ ॐ महामूर्तये नमः

विशाल दिव्य मूर्ति वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७१९ ॐ दीप्तमूर्तये नमः

प्रकाशमान तेजस्वी मूर्ति वाले

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

७२० ॐ अमूर्तिमते नमः

निराकार तत्व

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७२१ ॐ अनेकमूर्तये नमः

अनेक रूपों वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७२२ ॐ अव्यक्ताय नमः

अव्यक्त अगोचर

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७२३ ॐ शतमूर्तये नमः

सौ रूपों वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७२४ ॐ शताननाय नमः

सौ मुख वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७२५ ॐ एकाय नमः

अद्वैत सत्य

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७२६ ॐ नैकाय नमः

अनेक रूप प्रपंच

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७२७ ॐ सवाय नमः

यज्ञ रूप सोम रस

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७२८ ॐ काय नमः

आनंद स्वरूप परमात्मा

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७२९ ॐ काय नमः

परम खोज लक्ष्य

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७३० ॐ यते नमः

जो प्रत्यक्ष सत्य है

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७३१ ॐ तते नमः

वह परोक्ष सत्य

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७३२ ॐ पदमनुत्तमाय नमः

सर्वोच्च परम पद

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७३३ ॐ लोकबन्धवे नमः

जगत के सच्चे भाई

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

७३४ ॐ लोकनाथाय नमः

लोकों के स्वामी

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

७३५ ॐ माधवाय नमः

लक्ष्मीपति

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

७३६ ॐ भक्तवत्सलाय नमः

भक्तों से स्नेह करने वाले

यह नाम कोमलता, शांति और अभय प्रदान करने वाले कमल के समान कोमल चरणों का सूचक है। ध्यान के मार्ग पर, यह गुण अशांत चित्त को शीतलता और सुरक्षा प्रदान करता है।

इस नाम के मनन से साधक को भय से मुक्ति और दिव्य करुणा की अनुभूति होती है।

७३७ ॐ सुवर्णवर्णाय नमः

स्वर्ण के समान कांति वाले

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

७३८ ॐ हेमांगाय नमः

स्वर्ण जैसी देह वाले

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

७३९ ॐ वरांगाय नमः

सुन्दर दिव्य विग्रह वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७४० ॐ चन्दनांगदिने नमः

चन्दन लेपित बाजूबंद धारी

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७४१ ॐ वीरहने नमः

दुष्टों के विनाशक

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

७४२ ॐ विषमाय नमः

अतुलनीय अद्वितीय

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७४३ ॐ शून्याय नमः

गुणों से परे निर्गुण

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७४४ ॐ घृताशिने नमः

आहुति ग्रहण करने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७४५ ॐ अचलाय नमः

स्थिर पर्वत रूप अचल

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७४६ ॐ चलाय नमः

वायु रूप गति चक्र

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७४७ ॐ अमानिने नमः

अहंकार रहित

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७४८ ॐ मानदाय नमः

दूसरों को मान देने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७४९ ॐ मान्याय नमः

परम आदरणीय

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७५० ॐ लोकस्वामिने नमः

ब्रह्मांड के स्वामी

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

७५१ ॐ त्रिलोकधृक् नमः

तीनों लोकों को धारण करने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७५२ ॐ सुमेधने नमः

उत्कृष्ट बुद्धि वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७५३ ॐ मेधजाय नमः

यज्ञ से प्रकट होने वाले

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

७५४ ॐ धन्याय नमः

परम कृतार्थ

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७५५ ॐ सत्यमेधने नमः

सत्य संकल्प बुद्धि वाले

यह नाम ध्यान, योग और एकाग्रता के परम आदर्श को निरूपित करता है। यह गुण दर्शाता है कि मन की स्थिरता और अंतर्मुखता ही सत्य की खोज का आधार है।

इस दिव्य नाम पर ध्यान लगाने से मानसिक विक्षेप शांत होते हैं और समाधि का अनुभव होता है।

७५६ ॐ धराधराय नमः

पृथ्वी को सहारा देने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७५७ ॐ तेजोवृषाय नमः

किरणों व ऊर्जा की वर्षा करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७५८ ॐ द्युतिधराय नमः

तेज और आभा को धारण करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७५९ ॐ सर्वशस्त्रभृतांवराय नमः

समस्त अस्त्र-शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७६० ॐ प्रग्रहाय नमः

इन्द्रियों को नियंत्रित करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७६१ ॐ निग्रहाय नमः

सबको संयम में रखने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७६२ ॐ व्यग्राय नमः

सृष्टि रचना में सदा तत्पर

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७६३ ॐ नैकश्रृंगाय नमः

चार सींगों वाले अवतार रूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७६४ ॐ गदाग्रजाय नमः

गद के बड़े भाई रूप कृष्ण

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७६५ ॐ चतुर्मूर्तये नमः

चार दिव्य रूपों वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७६६ ॐ चतुर्बाहवे नमः

चतुर्भुजधारी

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७६७ ॐ चतुर्व्यूहाय नमः

चार व्यूहों वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७६८ ॐ चतुर्गतये नमः

चारों पुरुषार्थों के परम लक्ष्य

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७६९ ॐ चतुरात्मने नमः

चार रूपों वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७७० ॐ चतुर्भावाय नमः

चारों अवस्थाओं के उत्पत्ति स्थान

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७७१ ॐ चतुर्वेदविद् नमः

चारों वेदों के पूर्ण ज्ञाता

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७७२ ॐ एकपाते नमः

एक चरण वाले विराट रूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७७३ ॐ समावर्ताय नमः

संसार चक्र को कुशलता से घुमाने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७७४ ॐ निवृत्तात्मने नमः

सांसारिक बंधनों से मुक्त

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७७५ ॐ दुर्जयाय नमः

जीतने में अत्यंत कठिन

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७७६ ॐ दुरतिक्रमाय नमः

जिसकी आज्ञा टाली न जा सके

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७७७ ॐ दुर्लभाय नमः

परम भक्ति से प्राप्य

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७७८ ॐ दुर्गमाय नमः

कठिनाई से जानने योग्य

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७७९ ॐ दुर्गाय नमः

संकटों से रक्षा करने वाले अभेद्य

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७८० ॐ दुरावासाय नमः

कठिन ध्यान धारणा के लक्ष्य

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७८१ ॐ दुरारिहने नमः

दुष्ट शत्रुओं का नाश करने वाले

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

७८२ ॐ शुभांगाय नमः

सुन्दर कल्याणकारी विग्रह

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

७८३ ॐ लोकसारंगाय नमः

संसार के सार तत्व रूप ग्राही

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७८४ ॐ सुतन्तवे नमः

सृष्टि रूपी सुन्दर तन्तु वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७८५ ॐ तन्तुवर्धनाय नमः

सृष्टि विस्तार के सूत्रधार

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७८६ ॐ इन्द्रकर्मने नमः

इन्द्र के समान महान कर्म करने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७८७ ॐ महाकर्मने नमः

महान कर्म करने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७८८ ॐ कृतकर्मने नमः

समस्त कार्यों को पूर्ण करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७८९ ॐ कृतागमाय नमः

शास्त्रों के रचयिता

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

७९० ॐ उद्भवाय नमः

उत्पत्ति स्थान

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

७९१ ॐ सुन्दराय नमः

परम मनोहर सुन्दर

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

७९२ ॐ सुन्दाय नमः

करुणा आर्द्र दयालु

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

७९३ ॐ रत्ननाभाय नमः

रत्न जैसी नाभि वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

७९४ ॐ सुलोचनाय नमः

सुन्दर दिव्य दृष्टि वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

७९५ ॐ अर्काय नमः

पूजनीय सूर्य तेज रूप

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

७९६ ॐ वाजसनाय नमः

अन्न और जीवन शक्ति प्रदाता

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

७९७ ॐ श्रृंगिणे नमः

श्रृंग धारी वराह-मत्स्य रूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

७९८ ॐ जयन्ताय नमः

सर्वविजेता अजेय

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

७९९ ॐ सर्वविज्जयिणे नमः

सब कुछ जानने वाले विजयी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८०० ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः

स्वर्ण अक्षरों वाले दिव्य रूप

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

८०१ ॐ अक्षोभ्याय नमः

कभी विचलित न होने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८०२ ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः

वाणी के समस्त स्वामियों के स्वामी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८०३ ॐ महाह्रदाय नमः

आनंद का विशाल सरोवर

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८०४ ॐ महागर्ताय नमः

विशाल माया गर्त रूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८०५ ॐ महाभूताय नमः

पंचमहाभूतों के परम सत्य रूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८०६ ॐ महानिधये नमः

परम अविनाशी खजाना

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८०७ ॐ कुमुदाय नमः

पृथ्वी को आनंद देने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८०८ ॐ कुन्दराय नमः

धरती को शुद्ध करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८०९ ॐ कुन्दाय नमः

कुन्द पुष्प के समान श्वेत

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८१० ॐ पर्जन्याय नमः

आनंद वर्षा करने वाले मेघ

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८११ ॐ पावनाय नमः

पवित्र करने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८१२ ॐ अनिलाय नमः

वायु स्वरूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८१३ ॐ अमृतांशाय नमः

अमृत मय चन्द्र कला रूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८१४ ॐ अमृतवपवे नमः

अमृत मय दिव्य देह वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८१५ ॐ सर्वज्ञाय नमः

सबके ज्ञाता

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८१६ ॐ सर्वतोमुखाय नमः

सब ओर मुख वाले सर्वव्यापी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८१७ ॐ सुलभाय नमः

भक्ति से सरलता से प्राप्य

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८१८ ॐ सुव्रताय नमः

सत्य व्रत वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८१९ ॐ सिद्धाय नमः

परम सिद्ध

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८२० ॐ शत्रुजिते नमः

शत्रुओं को पूर्णतः जीतने वाले

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

८२१ ॐ शत्रुतापनाय नमः

शत्रुओं को संताप देने वाले

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

८२२ ॐ न्यग्रोधाय नमः

वटवृक्ष के समान छाया रूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८२३ ॐ उदुम्बराय नमः

पोषण प्रदाता अन्न रूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८२४ ॐ अश्वत्थाय नमः

पीपल वृक्ष रूप नित्य परिवर्तनशील

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८२५ ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः

चाणूर राक्षस के संहारक

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

८२६ ॐ सहस्रार्चये नमः

सहस्र किरणों वाले अग्नि-सूर्य

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८२७ ॐ सप्तजिह्वाय नमः

अग्नि की सात जीभों वाले रूप

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

८२८ ॐ सप्तैधने नमः

सात समिधाओं द्वारा पूजित

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८२९ ॐ सप्तवाहनाय नमः

सात घोड़ों के सूर्य रथ वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८३० ॐ अमूर्तये नमः

आकार रहित निराकार तत्व

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८३१ ॐ अनघाय नमः

पापरहित

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८३२ ॐ अचिन्त्याय नमः

चिन्तन से परे

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८३३ ॐ भयकृते नमः

दुष्टों में भय पैदा करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८३४ ॐ भयनाशनाय नमः

भय दूर करने वाले

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

८३५ ॐ अणवे नमः

अति सूक्ष्म अणु रूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८३६ ॐ बृहते नमः

महान विशाल विराट

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८३७ ॐ कृशाय नमः

सूक्ष्म रूप विरहित

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

८३८ ॐ स्थूलाय नमः

विराट स्थूल रूप ब्रह्मांड

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८३९ ॐ गुणभृते नमः

सृष्टि के गुणों के धारक

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८४० ॐ निर्गुणाय नमः

गुणों से परे निर्गुण तत्व

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८४१ ॐ महते नमः

सर्वश्रेष्ठ महान

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८४२ ॐ अधृताय नमः

स्वयं सिद्ध बिना किसी सहारे के

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८४३ ॐ स्वधृताय नमः

अपने आप में स्थित धारण कर्ता

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

८४४ ॐ स्वास्थ्याय नमः

सुन्दर मुख वाले वेद वाचक

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८४५ ॐ प्राग्वंशाय नमः

प्राचीनतम वंश मूल आधार

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८४६ ॐ वंशवर्धनाय नमः

वंश की वृद्धि करने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८४७ ॐ भारभृते नमः

सृष्टि का समस्त भार उठाने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८४८ ॐ कथिताय नमः

वेद शास्त्रों में वर्णित

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८४९ ॐ योगिने नमः

योग युक्त परम ध्यान मग्न

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८५० ॐ योगीशाय नमः

योगियों के परम स्वामी

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

८५१ ॐ सर्वकामदाय नमः

समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८५२ ॐ आश्रमाय नमः

परम विश्राम स्थल आश्रय

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८५३ ॐ श्रमणाय नमः

संसार ताप को दूर करने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८५४ ॐ क्षामाय नमः

परम शांत स्थिति

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८५५ ॐ सुपर्णाय नमः

सुन्दर पंखों वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८५६ ॐ वायुवाहनाय नमः

वायु को चलाने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८५७ ॐ धनुर्धराय नमः

श्री राम रूप धनुषधारी

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८५८ ॐ धनुर्वेदाय नमः

शस्त्र विद्या ज्ञान रूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८५९ ॐ दण्डाय नमः

परम दण्ड न्याय शासन

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८६० ॐ दमयित्रे नमः

दुष्टों का दमन करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८६१ ॐ दमाय नमः

इन्द्रिय संयम रूप शक्ति

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८६२ ॐ अपराजिताय नमः

अजेय

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८६३ ॐ सर्वसहाय नमः

सब कुछ सहने वाले परम क्षमाशील

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८६४ ॐ नियन्त्रे नमः

परम नियन्त्रक नियामक

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८६५ ॐ अनियमाय नमः

नियमों से परे परम स्वतन्त्र

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८६६ ॐ अयमाय नमः

मृत्यु व बन्धन से परे

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८६७ ॐ सत्त्वते नमः

परम बल और सत्त्व गुण संपन्न

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८६८ ॐ सात्त्विकाय नमः

सत्त्व गुण स्वरूप परम सत्य

यह नाम काल के नियंत्रक और सीमाओं के परे जाने की शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह पुरानी आदतों और नकारात्मकता के विसर्जन का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस नाम का मनन साधक को वैराग्य और आंतरिक शुद्धि की ओर अग्रसर करता है।

८६९ ॐ सत्याय नमः

परम सत्य

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८७० ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः

सत्य और धर्म के परम आश्रय

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८७१ ॐ अभिप्रायाय नमः

परम लक्ष्य चाहने योग्य

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८७२ ॐ प्रियार्हाय नमः

प्रेम करने योग्य परम प्रिय

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८७३ ॐ अर्हाय नमः

परम पूजनीय आराधना योग्य

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८७४ ॐ प्रियकृते नमः

भक्तों का प्रिय करने वाले

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

८७५ ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः

प्रेम को बढ़ाने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८७६ ॐ विहायसगतये नमः

आकाश मार्ग रूप मोक्ष गति

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८७७ ॐ ज्योतये नमः

परम स्वयं प्रकाश ज्योति

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८७८ ॐ सुरुचये नमः

उत्कृष्ट सुरुचि सुन्दर संकल्प

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८७९ ॐ हुतभुक् नमः

यज्ञ आहुति ग्रहण करने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८८० ॐ विभवे नमः

सर्वव्यापी स्वामी

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८८१ ॐ रवये नमः

सूर्य रूप प्रकाशक

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

८८२ ॐ विरोचनाय नमः

विशेष रूप से चमकने वाले

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

८८३ ॐ सूर्याय नमः

सृष्टि प्रकाशक सूर्य

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८८४ ॐ सवित्रे नमः

जगत उत्पादक रचयिता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८८५ ॐ रविलोचनाय नमः

सूर्य रूपी नेत्र वाले

यह नाम असीम करुणा, प्रेम और भक्तवत्सलता का प्रतीक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि परमात्मा सदैव प्रेम स्वरूप हैं और वे केवल शुद्ध भक्ति और समर्पण से प्राप्त होते हैं।

इस नाम के जप से हृदय में भक्ति रस का प्रवाह होता है और अहंकार विलीन होता है।

८८६ ॐ अनन्ताय नमः

असीम अनंत

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८८७ ॐ हुतभुक् नमः

यज्ञ आहुति ग्रहण करने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८८८ ॐ भोक्त्रे नमः

भोक्ता

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८८९ ॐ सुखदाय नमः

सुखदाता

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८९० ॐ नैकजाय नमः

अनेक बार अवतार लेने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८९१ ॐ अग्रजाय नमः

प्रथम प्रकट ज्येष्ठ

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

८९२ ॐ अनिर्विण्णाय नमः

उदासीनता रहित

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८९३ ॐ सदामर्षिणे नमः

भक्तों की भूलों को क्षमा करने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

८९४ ॐ लोकाधिष्ठानाय नमः

लोकों के परम आधार स्थल

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

८९५ ॐ अद्भुताय नमः

परम विस्मयकारी आश्चर्य रूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

८९६ ॐ सनाते नमः

सनातन अनादि काल रूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

८९७ ॐ सनातनतमाय नमः

प्राचीनतम सनातन पुरुष

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

८९८ ॐ कपिलाय नमः

कपिल वर्ण अवतार रूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

८९९ ॐ कपये नमः

वाराह-सूर्य रूप उद्धारक

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९०० ॐ अव्ययाय नमः

अविनाशी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

श्रीविष्णुसहस्रनाम स्वाध्याय
(आदि शंकर भाष्य)

९०१ ॐ स्वस्तिदाय नमः
कल्याणदाता मंगलदाता

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९०२ ॐ स्वस्तिकृते नमः
कल्याण के रचयिता करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९०३ ॐ स्वस्तये नमः
कल्याण मंगल स्वरूप

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

९०४ ॐ स्वस्तिभुक् नमः
कल्याण और सुख के भोक्ता

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९०५ ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नमः
शीघ्र कल्याण करने वाले कुशल

यह नाम ईश्वर की असीम महिमा, सुंदरता और गरिमा को प्रकट करता है। ध्यान में, यह गुण हमें ब्रह्मांड की दिव्य सुंदरताओं में परमात्मा के दर्शन करने की प्रेरणा देता है।

इस दिव्य स्वरूप का स्मरण करने से साधक में श्रद्धा और विस्मय का भाव जागृत होता है।

९०६ ॐ अरौद्राय नमः

सौम्य शान्त क्रोधरहित

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९०७ ॐ कुण्डलिने नमः

कुण्डल धारी शेषनाग स्वरूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९०८ ॐ चक्रिणे नमः

सुदर्शन चक्र धारी

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९०९ ॐ विक्रमिणे नमः

शौर्यवान

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९१० ॐ ऊर्जितशासनाय नमः

महान अटल शासन वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९११ ॐ शब्दातिगाय नमः

शब्दों की सीमा से परे

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९१२ ॐ शब्दसहाय नमः

वेद ध्वनियों को स्वीकार करने वाले

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९१३ ॐ शिशिराय नमः

शीतल शान्ति प्रदाता ऋतू

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९१४ ॐ शर्वरीकराय नमः

संसार रात्रि काल चक्र के कर्ता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९१५ ॐ अक्रूराय नमः

क्रूरता रहित दयालु शांत

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९१६ ॐ पेशलाय नमः

अति सुकोमल सुन्दर मधुर

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९१७ ॐ दक्षाय नमः

परम चतुर व कुशल

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९१८ ॐ दक्षिणाय नमः

शत्रु नाशक उदार कुशल

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९१९ ॐ क्षमिणां वराय नमः

क्षमाशीलों में सर्वश्रेष्ठ

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९२० ॐ विद्वत्तमाय नमः

विद्वानों में श्रेष्ठ सर्वज्ञ

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९२१ ॐ वीतभयाय नमः

भयरहित मुक्त

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९२२ ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः

सुनने और कीर्तन में पवित्र

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९२३ ॐ उत्तारणाय नमः

भवसागर से पार लगाने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९२४ ॐ दुष्कृतिहने नमः

पापों और दुष्ट प्रवृत्तियों के नाशक

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

९२५ ॐ पुण्याय नमः

परम पवित्रता रूप

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९२६ ॐ दुःस्वप्ननाशनाय नमः

बुरे स्वप्नों और भयों के नाशक

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

९२७ ॐ वीरहने नमः

दुष्टों के विनाशक

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

९२८ ॐ रक्षणाय नमः

रक्षा करने वाले रक्षक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९२९ ॐ सन्ताय नमः

सज्जन रूप परम सत्य सत्

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९३० ॐ जीवनाय नमः

प्राणदाता जीवन आधार

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९३१ ॐ पर्यवस्थिताय नमः

सब ओर व्याप्त पूर्ण सत्य

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९३२ ॐ अनन्तरूपाय नमः

अनंत रूपों वाले विराट

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९३३ ॐ अनन्तश्रिये नमः

अनंत लक्ष्मी वैभव संपन्न

यह नाम दिव्य तेज, आंतरिक प्रकाश और परम ऐश्वर्य का सूचक है। यह दर्शाता है कि आत्मा का तेज सूर्य से भी अधिक देदीप्यमान है जो अज्ञान के अंधकार को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

इस नाम के चिंतन से साधक का व्यक्तित्व तेजस्वी और ओजस्वी बनता है।

९३४ ॐ जितमन्यवे नमः

क्रोध को जीतने वाले शांत

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९३५ ॐ भयापहाय नमः

भय को दूर भगाने वाले

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९३६ ॐ चतुरश्राय नमः

न्याय संगत चतुर सत्य विग्रह

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९३७ ॐ गभीरात्मने नमः

अगाध गंभीर आत्मा

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

९३८ ॐ विदिशाय नमः

दिशाओं के भेद करने वाले व्यापक

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९३९ ॐ व्यादिशाय नमः

विशेष आज्ञा देने वाले शासक

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९४० ॐ दिशाय नमः

दिशा निर्देश वेद उपदेशक

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९४१ ॐ अनादये नमः

शुरुआत रहित अनादि

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९४२ ॐ भूर्भुवाय नमः

पृथ्वी और अंतरिक्ष के आधार

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९४३ ॐ लक्ष्म्यै नमः

परम शोभा सौंदर्य ऐश्वर्य

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९४४ ॐ सुवीराय नमः

उत्कृष्ट वीर पराक्रमी

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९४५ ॐ रुचिरांगदाय नमः

सुन्दर केयूर बाजूबंद धारी

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९४६ ॐ जननाय नमः

सबको पैदा करने वाले जनक

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

९४७ ॐ जनजन्मादये नमः

प्राणियों के जन्म के मूल कारण

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९४८ ॐ भीमाय नमः

दुष्टों के लिए भयानक रूप

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९४९ ॐ भीमपराक्रमाय नमः

भयानक पराक्रम शौर्य वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९५० ॐ आधारनिलयाय नमः

समस्त आधारों के मुख्य आधार

यह नाम संसार के धारण और पोषण करने वाली दिव्य चेतना को दर्शाता है। जीवन में, यह गुण हमें सिखाता है कि निस्वार्थ सेवा और दूसरों का कल्याण ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

इस नाम का चिंतन साधक के हृदय में करुणा और कृतज्ञता का संचार करता है।

९५१ ॐ अधात्रे नमः

बिना किसी अन्य सहारे के स्वयं सिद्ध

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

९५२ ॐ पुष्पहासाय नमः

फूलों के खिलने जैसा दिव्य हास्य

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९५३ ॐ प्रजागराय नमः

सदा पूर्ण जाग्रत चेतन

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९५४ ॐ ऊर्ध्वगाय नमः

सर्वोच्च ऊपर गमन करने वाले गति

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९५५ ॐ सत्पथाचाराय नमः

सदाचार मार्ग के प्रवर्तक रक्षक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९५६ ॐ प्राणदाय नमः

प्राणदाता

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९५७ ॐ प्रणवाय नमः

ओंकार स्वरूप

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९५८ ॐ पणाय नमः

व्यवहार संचालक परम नियामक

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९५९ ॐ प्रमाणाय नमः

परम साक्ष्य

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९६० ॐ प्राणनिलयाय नमः

प्राणों के विश्राम आश्रय स्थल

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९६१ ॐ प्राणभृते नमः

प्राण शक्ति के पोषक धारक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९६२ ॐ प्राणजीवनाय नमः

प्राणों को जीवन देने वाले परम चेतना

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९६३ ॐ तत्त्वाय नमः

परम परमार्थ सत्य तत्व

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९६४ ॐ तत्त्वविद् नमः

तत्व को जानने वाले सत्य दृष्टा

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

९६५ ॐ एकात्मने नमः

अद्वितीय एक मात्र सत्य आत्मा

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९६६ ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय नमः

जन्म-मरण बुढ़ापे से परे नित्य

यह नाम भौतिक रूपों के परिवर्तन और आत्मा की परम स्वतंत्रता का सूचक है। यह दर्शाता है कि मृत्यु या विनाश केवल एक संक्रमण है, जबकि आत्मा अमर और अविकारी है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक मोह और आसक्ति के बंधनों से मुक्त होता है।

९६७ ॐ भूर्भुवःस्वस्तरवे नमः

तीनों लोकों को छाया देने वाले कल्पवृक्ष

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९६८ ॐ ताराय नमः

तारक मन्त्र

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९६९ ॐ सवित्रे नमः

जगत उत्पादक रचयिता

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९७० ॐ प्रपितामहाय नमः

परदादा ब्रह्मा के भी जनक पिता

यह नाम दिव्य रचनात्मक शक्ति और ब्रह्मांड के उद्गम को रेखांकित करता है। अध्यात्म के मार्ग पर, यह दर्शाता है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमात्मा का ही विस्तार है।

इस नाम के मनन से साधक प्रकृति के रहस्यों और जीवन की अनमोल धारा को समझने में समर्थ होता है।

९७१ ॐ यज्ञाय नमः

यज्ञ स्वरूप

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९७२ ॐ यज्ञपतये नमः

यज्ञ के स्वामी अधिपति

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

९७३ ॐ यज्वने नमः

यज्ञ करने वाले यजमान स्वयं

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९७४ ॐ यज्ञांगाय नमः

यज्ञ के समस्त अंगों के स्वरूप

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९७५ ॐ यज्ञवाहनाय नमः

यज्ञ फल को पहुंचाने वाले वाहक

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९७६ ॐ यज्ञभृते नमः

यज्ञ की रक्षा और पोषण करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९७७ ॐ यज्ञकृते नमः

यज्ञ के प्रवर्तक प्रारंभ करने वाले

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९७८ ॐ यज्ञिने नमः

यज्ञ के फल भोक्ता परम साक्षी

यह नाम सर्वव्यापकता और चराचर जगत के निरंतर पालन-पोषण का प्रतीक है। ध्यान में, यह गुण परमात्मा की रक्षात्मक और पोषणकारी शक्ति का स्मरण कराता है जो प्रत्येक क्षण हमारे अस्तित्व को संभालती है।

इस नाम का जप करने से साधक में सुरक्षा, संतोष और परम शांति का भाव जागृत होता है।

९७९ ॐ यज्ञभुक् नमः

यज्ञ भाग ग्रहण करने वाले परम भोक्ता

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९८० ॐ यज्ञसाधनाय नमः

यज्ञ सिद्धि के मुख्य साधन उपाय

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९८१ ॐ यज्ञान्तकृते नमः

यज्ञ पूर्णाहुति फल समाप्ति स्थल

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९८२ ॐ यज्ञगुह्याय नमः

यज्ञ का गुप्त परम रहस्य आत्मज्ञान

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९८३ ॐ अन्नाय नमः

भोग्य पदार्थ जीवन पोषण अन्न

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

९८४ ॐ अन्नादाय नमः

अन्न का उपभोग करने वाले भोक्ता

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९८५ ॐ आत्मयोनये नमः

अपने आप के उत्पत्ति कारण स्वयं सिद्ध

यह नाम बुद्धि के प्रकाशक और परम ज्ञान के दाता स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक पथ पर, यह अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विवेक की ज्योति प्रज्वलित करता है।

इस गुण के मनन से साधक को अपने वास्तविक स्वरूप और आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

१८६ ॐ स्वयंजाताय नमः

स्वयं प्रकट होने वाले अजन्मा

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

१८७ ॐ वैखानाय नमः

भूमि को खोदकर उद्धार करने वाले वराह

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१८८ ॐ सामगायनाय नमः

सामवेद का मधुर गान करने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

१८९ ॐ देवकीनन्दनाय नमः

माता देवकी के पुत्र श्री कृष्ण

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

१९० ॐ स्रष्ट्रे नमः

सृष्टिकर्ता

यह नाम सृष्टि के आदिकारण और ब्रह्मांड की उत्पत्ति का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि समस्त भौतिक रूप उसी परम सत्ता से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी में लीन हो जाते हैं।

इस गुण का चिंतन साधक में सृजनात्मक ऊर्जा का विकास करता है और जीवन को नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

९९१ ॐ क्षितीशाय नमः

पृथ्वी के सर्वोच्च राजा रक्षक

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९९२ ॐ पापनाशनाय नमः

समस्त पापों का नाश करने वाले परम पावन

यह नाम परम शांति और संसार के उपशमन का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं। यह गुण हमें सिखाता है कि समस्त इच्छाओं का अंत ही शाश्वत शांति का मार्ग है।

इस नाम के चिंतन से मन के विकार दूर होते हैं और परम मौन स्थापित होता है।

९९३ ॐ शंखभृते नमः

पाञ्चजन्य शंख धारण करने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

९९४ ॐ नन्दकिने नमः

नन्दक तलवार धारण करने वाले ज्ञान रूप

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।

९९५ ॐ चक्रिणे नमः

सुदर्शन चक्र धारी

यह नाम भक्तों की पुकार सुनने और उनकी बाधाओं को हरने वाली कृपालु शक्ति को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि जब साधक पूर्ण विश्वास के साथ शरण में आता है, तो उसकी सभी चिंताएं समाप्त हो जाती हैं।

इस नाम का स्मरण हृदय को कृतज्ञता और आनंद से भर देता है।

श्रीविष्णुसहस्रनाम स्वाध्याय
(आदि शंकर भाष्य)

९९६ ॐ शार्ङ्गधन्वने नमः
शार्ङ्ग नामक दिव्य धनुष धारी

यह नाम अविनाशी, शाश्वत और इंद्रियों से परे अव्यक्त सत्ता का सूचक है। यह गुण दर्शाता है कि सत्य देश, काल और वस्तु की सीमाओं से परे है, जिसका न कभी प्रारंभ हुआ और न कभी अंत।

इस नाम के चिंतन से साधक संसार की नश्वरता से ऊपर उठता है।

९९७ ॐ गदाधराय नमः
कौमोदकी गदा धारण करने वाले

यह नाम ईश्वर के रक्षक और पोषक स्वरूप को प्रकट करता है जो संसार की व्यवस्था को संतुलित रखता है। आत्मिक स्तर पर, यह हमें विश्वास दिलाता है कि हम सदैव दिव्य संरक्षण में सुरक्षित हैं।

इस गुण के ध्यान से आंतरिक भय दूर होता है और श्रद्धा सुदृढ़ होती है।

९९८ ॐ रथांगपाणये नमः
हाथ में रथ का पहिया सुदर्शन चक्र धारी

यह नाम संपूर्ण विश्व के सृजनकर्ता और जीवन के प्रारंभ का सूचक है। यह गुण हमें स्मरण कराता है कि हमारी अंतर्निहित चेतना ही सभी संकल्पों और विचारों की जननी है।

इस दिव्य स्वरूप का ध्यान करने से चित्त शांत और रचनात्मक शक्ति से परिपूर्ण होता है।

९९९ ॐ अक्षोभ्याय नमः
कभी विचलित न होने वाले

यह नाम शुद्ध चेतना, साक्षी भाव और अंतर्यामी परमात्मा का प्रतीक है। ध्यान में, यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की सजगता ही सत्य है जो सुख-दुख से निर्लिप्त रहती है।

इस नाम का स्मरण करने से साधक विचारों से परे जाकर स्वयं को साक्षी रूप में अनुभव करता है।

१००० ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः
समस्त शक्तियों को अस्त्र-शस्त्र बनाने वाले

यह नाम परम शुभ, मंगल और कल्याणकारी ऊर्जा का प्रतीक है। अध्यात्म में, यह गुण सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर जीवन में सौभाग्य और प्रसन्नता का संचार करता है।

इस नाम पर ध्यान लगाने से साधक का संपूर्ण जीवन दैवीय कृपा से आलोकित होता है।